नैतिक शिक्षा के आलोक में अभिनवपंचतन्त्रम्

डॉ. डॉली जैन

संस्कृत वाङ्मय में कथा साहित्य की प्राचीनतम एवं सुदीर्घ परम्परा रही है। ये कथाएँ सभी प्रकार की हैं– मानव जीवन की आख्यायिकाएँ, पशु पक्षियों की कहानियों के माध्यम से नीति शिक्षा देने वाली कथाएँ, जिन्हें अंग्रेजी में फेबल्स कहा जाता है, यात्रा कथाएँ, प्रतीक कथाएँ आदि–वेदकाल से ही संस्कृत में लिखी जाती रहीं है। पशु पक्षी विषयक ग्रन्थों में पंचतन्त्र सर्वप्रमुख है। इसके लेखक विष्णु शर्मा ने कहानियों के माध्यम से जीवनमूल्यों की शिक्षा देने के उद्देश्य से ही पंचतन्त्र की रचना की थी। इसी के आधार पर अन्य ग्रन्थ भी लिखे गए जिनमें ''अभिनवपंचतन्त्रम्'' भी एक है। यह प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र का सारस्वत उच्छ्वास है। कथाकार ने प्राचीन वक्ता एवं श्रोता के माध्यम से ही पंचतन्त्र को आगे बढ़ाया है, इसे इतिहास के गठ्ठर से निकाल कर वर्तमान समाज से जोड़ा है। इसकी कथाएँ रोचक हैं, प्रत्येक में कोई न कोई नैतिक शिक्षा है। नैतिक शिक्षा में उन सभी तथ्यों अथवा प्रश्नों का समावेश है, जिनका मानव जीवन के सच्चे स्वरूप और अन्तिम उद्देश्य अथवा लक्ष्य से सम्बन्ध है। ''अभिनवपंचतन्त्रम्'' में मानव के व्यवहार को मर्यादित करने के लिए अपेक्षित तत्त्वों का रोचक शैली में उल्लेख किया गया है।